शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

आत्मनिर्भर भारत और एकादश व्रत

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष इस बात की ओर इशारा कर रहा है कि राष्ट्र उत्थान का सपना व्रत निष्ठाओं से पूर्ण हो सकता है। आज देश के नागरिकों के सामने ऐसा कोई आदर्श लक्ष्य नहीं है, जिसकी प्राप्ति में वे अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार हो जाएं। व्यक्तिगत जीवन में आज भी नैतिक मार्ग पर अग्रसर होने के लिए अनेक प्रकार के व्रतों का पालन किया जाता है। यह भारतीय संस्कृति की अन्यतम विशेषता है। आजादी आंदोलन के दौरान साधु-संन्यासियों के लिए आवश्यक व्रतों को समाज जीवन में दाखिल कराने के लिए महात्मा गांधी ने महापराक्रम किया। प्राचीनकाल में प्रचलित पांच महाव्रतों में छः व्रत और जोड़कर गांधीजी ने उसे स्वतंत्रता सेनानियों का अस्त्र बना दिया। ये पांच महाव्रत हैं : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और असंग्रह। गांधीजी के पहले इन व्रतों की आवश्यकता सामान्य संसारी व्यक्तियों के लिए नहीं थी। महामुनि पतंजलि ने भी अपने योगसूत्र में इन पांच महाव्रतों को स्थान दिया है। लेकिन ये व्रत योग मार्ग से साधना करने वाले संन्यासियों के लिए हैं, ऐसी उनकी कल्पना थी। गांधीजी ने इस कल्पना को बदल दिया। इसके साथ उन्होंने छः व्रत और जोड़ दिए : शरीर श्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जनम, सर्वधर्म समानत्व, स्वदेशी, स्पर्श भावना। स्वयं गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में इन व्रतों की कठोर साधना की और अपने साथियों से भी इनके पालन का आग्रह रखा। भारत आगमन के बाद अपने आश्रम में 15 सालों तक इन व्रतों का पालन किया। उनके साथी विनोबा जी ने वर्धा आश्रम में 12 साल तक व्रतों का अनुष्ठान किया और दूसरों को से भी करवाया। आज भारत व्रत विहीन है। उसके सामने न कोई आदर्श है और न लक्ष्य। समस्त इंद्रियों से अनंत इच्छाओं को पूरा करने की अदम्य लालसा ने मनुष्य को पथभ्रष्ट कर दिया है। महात्मा गांधी ने इन व्रतों के आधार से समूह का निर्माण किया। उस समूह ने इन व्रतों की शक्ति को पहचाना और राष्ट्र निर्माण के लिए व्रतों को अपरिहार्य बताया। आज भले ही स्वार्थ के वशीभूत होकर इन व्रतों को कालबाह्य और अप्रांसगिक बताया जा रहा है। जरा रुककर विचार करेंगे तो पायेंगे कि देश में अशांति और सामाजिक विघटन के लिए किसी भी प्रकार की व्रत निष्ठा न होना उत्तरदायी है। महात्मा गांधी ने एकादश व्रतों को समझाने और अपनाने के लिए आश्रमवासियों को प्रति मंगलवार यरवदा जेल से पत्र लिखे, जो मंगलप्रभात नाम से प्रकाशित हुए। आज भी उन व्रतों का उतना ही महत्व है, जितना आजादी आंदोलन में था। इन एकादश व्रतों में से स्वदेशी व्रत का विचार आत्मनिर्भर भारत की कुंजी है। महात्मा गांधी अपने स्वदेशी विचार में भारत के पुनरुद्धार का ब्ल्यू प्रिंट बता गए हैं। उन्हें विनम्रतापूर्वक अपनाने की आवश्यकता है। शब्दब्रह्म के शोधार्थियों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।